B - 4
L - 6

दिनांक
24/01/24

टीपू सुलतान एक खतरनाक शत्रु के रूप में

आर्थिक क्षेत्र मे :-

- एक मजबूत सेना के लिए आर्थिक आधार का बेहतर होना आवश्यक है।
- किसानो से भू-राजस्व वसूलने के लिए सीधे सम्पर्क।
- जमींदार तथा बिचौलियों को इस प्रक्रिया से अलग करना।
- यूरोपिय व्यापारिक कम्पनियों की तरह व्यापारिक कम्पनी की स्थापना का इच्छुक। (असफल)
- अरब के देशो मे व्यापारिक प्रतिनिधियों को नियुक्त करना।
- मसालो के व्यापार पर एकाधिकार एवं राज्य की आय मे बढोत्तरी।

सैनिक क्षेत्र मे :-

- यूरोपीयन की तरह सेना का आधुनिकीकरण एवं फ्रांसीसियों की मदद।
- तोप एवं बंदूक कारखाना का विकास, नौसैनिक क्षमता का विकास तथा नौसैनिक केन्द्र की स्थापना।
- ब्रिटिश विरोधियों वाले देश से सम्पर्क स्थापित करना जैसे- अफ़गानिस्तान, तुर्की एवं फ्रांस
- नेपोलियन से पत्र व्यवहार।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों की समझ रखना।
- ब्रिटिश विरोधी राष्ट्रों से सम्पर्क बनाना।
- फ्रांसीसी क्रान्ति से संबंधित घटनाओं एवं विचारों को समझने का प्रयास करना।

जैसे- श्रीरंगपट्टनम में स्वतंत्रता का वृक्ष लगाया तथा जैकोबिन क्लब का सदस्य बना।

तृतीय मैसूर युद्ध 1790-1792 :-

कारण :-

- टीपू सुलतान की महत्वाकांक्षा एवं उसके सुधारों से अंग्रेजों का चिंतित होना स्वाभाविक था।
- अंग्रेजों की महत्वाकांक्षा।
- अंग्रेजों का युद्ध से पूर्व निजाम और मराठा को लालच दिखाना एवं अपने साथ जोड़ना। (कार्नवालिस गवर्नर जनरल 1786-1793)
- फ्रांसीसी क्रान्ति से फ्रांस का अस्थिर होना एवं मैसूर की कोई सहायता न दे पाना।
- अंग्रेजों को सही अवसर का देखना।

परिणाम :-

- मैसूर की पराजय, 1792 में श्रीरंगपट्टनम की सन्धि।
- टीपू द्वारा अंग्रेजों को आधा भू-भाग देना एवं उसके सहयोगियों को भी देना
- एक बड़ी राशि मुआवजे के रूप में देना।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

* कार्नवालिस

"मैंने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाएँ बिना शत्रु को कमजोर कर दिया"

चौथा युद्ध : 1799 :-

- 1799 ई० मे टीपू द्वारा वेलेजली की सहायकसान्धि प्रस्ताव को ठुकराना एवं युद्ध का विकल्प चुनना।
- निजाम और मराठों का अंग्रेजों की तरफ होना तथा युद्ध मे टीपू की पराजय एवं मृत्यु।
- मैसूर का एक छोटा भू-भाग वाडयार वंश के उत्तराधिकारी को देना तथा सहायक सान्धि पर हस्ताक्षर करवाना।

वेलेजली एवं भारत मे साम्राज्य विस्तार 1798-1805 :-

- वेलेजली का भारत आगमन, राजनीतिक रूप से अंग्रेजो की स्थिति मजबूत और कई चुनौतियाँ।

जैसे- मराठें, निजाम, मैसूर, सिन्ध इत्यादि।

- उसी समय पर फ्रांस और यूरोप मे नेपोलियन का एक शक्ति के रूप मे उदय।
- उसकी भी नजर भारत पर थी।
- वेलेजली ने भारत मे अंग्रेजो की स्थिति को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए।

* 1799 - मैसूर की पराजय

1803-1805 - मराठों की पराजय, सहायक सान्धि पर हस्ताक्षर।

KOS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

- कर्नाटक, तंजौर इत्यादि के शासको को पेंशन देना, प्रशासनिक दायित्व अपने हाथो मे लेना (पहले से अंग्रेजों पर निर्भर)
- डेनमार्क और नेपोलियन के बीच अच्छे सम्बन्ध
- वेलेजली द्वारा व्यापारिक केन्द्र (ट्रेंकोबार) एवं (सेरामपुर) पर नियंत्रण स्थापित करना।
- पुर्तगालीयों से बातचीत, गोवा मे ब्रिटिश सैनिक तैनात करना।
- भारत से सेना की टुकड़ी मिस्र भेजना नेपोलियन से लड़ने के लिए।
- सहायक सान्धि को आधार बनाया तथा भारतीय राज्यो को न केवल सुरक्षा के दृष्टिकोण से अंग्रेजो को निर्भर बनाया अपितु साम्राज्य विस्तार भी किया।

ये राज्य थे – हैदराबाद, मैसूर, तंजौर, अवध, पेशवा, भोसले, सिंधिया इत्यादि।

सहायक सान्धि

क्या है –

भारत मे साम्राज्य विस्तार के क्रम मे मुख्यत: अंग्रेजो के द्वारा अपनाई गई नीति जिसके अन्तर्गत भारतीय राज्यो को सुरक्षा के लिए अंग्रेजो पर निर्भर बनाया जा रहा था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

Note :-

- भारत मे इस नीति को प्रारम्भ करने का श्रेय डूप्ले को दिया जाता है।
- अंग्रेजो की तरफ से प्रथम गवर्नर क्लाइव था जिसने 1765 मे अवध से सान्धि की।
- वेलेजली से पूर्व अंग्रेजों की प्राथमिकता सुरक्षा के बदले धन लेने की थी।
- वेलेजली ने धन से अधिक संप्रभुता युक्त भू-भाग को प्राथमिकता दी।

सान्धि के प्रावधान :

- सान्धिकर्ता राज्य की सुरक्षा की जिम्मेदारी कम्पनी पर होगी।
- एवज मे पैसे के साथ-साथ संप्रभु युक्त भू-भाग दिया जायेगा।
- निर्भर राज्यों की विदेश नीति कम्पनी के द्वारा संचालित होंगी।
- कम्पनी की अनुमति के बिना किसी यूरोपियन को अपनी सेवा में नही रखेंगें।
- निर्भर राज्यो के दरबार मे एक ब्रिटिश रेजीमेंट होगा जो आन्तरिक मामलो में हस्तक्षेप नही करेगा।

अंग्रेजो की दृष्टिकोण से महत्त :-

- संप्रभुता युक्त भू-भाग के कारण अंग्रेजो का साम्राज्य विस्तार, आय मे वृद्धि और व्यापार मे सुरक्षा, महत्वपूर्ण स्थानो पर अंग्रेजो का नियंत्रण।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform

- अंग्रेजो की हाथों में सुरक्षा की जिम्मेदारी, भारत मे ब्रिटिश सैनिको की संख्या मे वृद्धि।
- भारतीय राजत्व पर एक विशाल सेना का गठन
- विदेश नीति पर नियंत्रण, भारतीय राज्यो को ब्रिटिश विरोधी गठबंधन पर रोक।
- रेजीडेंट के कारण निर्भर राज्यों के आन्तरिक परिस्थितियों की समग्र बेहतर।
- रेजीडेंट इन राज्यों मे वास्तविक सत्ता के केन्द्र बन गए।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR